International Journal of Education and Science Research
Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-3 Issue-6 December- 2016 P-ISSN 2348-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

"कानपुर नगर में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की पंथ निरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

बनवारी लाल यादव
शोधार्थी
श्री वेंकटेशवर विश्वविद्यालय, गजरौला

डॉ0 ऋतु भारद्वाज
शोध निर्देशिका
श्री वेंकटेशवर विश्वविद्यालय, गजरौला

देश के सभी धर्मों के मध्य कुण्ठा और द्वेष बढ़ रहा है, जिससे देश की एकता को क्षति पहुंच रही है। शिक्षालयों में जातिवाद, भाई–भतीजावाद और साम्प्रदायिकता का जहर चारों ओर फैल रहा है, जिससे शिक्षणार्थियों में पंथनिरपेक्षता विरोधी सामाजिक वातावरण उत्पन्न हो चुका है, जिसका प्रमाण समय–समय पर देश में होने वाले साम्प्रदायिक दंगे है। अतः देश में फैली हुई इस सामाजिक अशान्ति, टूटते विश्वास तथा धर्मान्धता की कगार पर खड़े देश को नफरत की आग से बचाने तथा शिक्षणार्थियों में पंथनिरपेक्षता प्रवृत्ति का विकास कर साम्प्रदायिकता के जहर को खत्म करने के लिए सरकार ने अपने प्रयास किये है। अतः इन प्रयासों की सार्थकता जानना आवश्यक है, क्योंकि पंथनिरपेक्ष प्रवृत्ति के विकास के द्वारा ही सामाजिक जीवन को उन्नत, प्रगतिशील एवं खुशहाल बनाया जा सकता है। आज भारतीय विद्यालयों में प्रायः शिक्षण सामग्री तथा सूचनाओं की कमी होने के कारण विद्यार्थी वर्ग केवल परीक्षा उत्तीर्ण होना ही अपना परम कर्तव्य मानता है और केवल रोजगार पाने के चक्कर में इधर–उधर भटकता रहता है। साथ ही विद्यार्थी वर्ग दिग्भ्रमित होकर अवांछनीय कार्यों की तरफ भी प्रेरित होता है। यह बात कभी भी नजर अंदाज नहीं की जा सकती है कि वर्तमान विद्यार्थी वर्ग ही देश का भावी कर्णधार है। अतः कक्षा के नियमित देश–विदेश में हो रही सम–सामायिक घटनाओं के विषय में जानकारी दे तथा यह जानने की कोशिश करें कि किसी समस्या विशेष के प्रति विद्यार्थी जगत क्या दृष्टिकोण है। वर्तमान समय में धर्म के आधार पर मानव समाज में एक अलगाववाद की भावना फैल चुकी है। मंदिर–मस्जिद के विवाद ने समाज में एक कटुता का बीच बो दिया है, जिसे दूर करना अति आवश्यक है। अतः इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने यह समस्या चुनी कि छात्राध्यापक एवं छाध्यापिकाओं में साम्प्रदायिकता की भावना कहां तक पहुंच चुकी है और इसके किस प्रकार समाप्त किया जा सकता है। इसके साथ ही साथ उनके अंदर सामाजिक चेतना कितनी है, वे सामाजिक समस्याओं एवं सामाजिक घटनाओ के प्रति कितने जागयक है तथा पंथनिरपेक्षता के संबंध में उनकी अभिवृत्ति क्या है।

अध्ययन के उद्देश्य

संसार में कोई भी क्रिया निरूद्देश्य नहीं होती है लक्ष्यविहीन प्रयासों के परिणाम निरर्थक होते हैं। हमारे समाज में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए उनके जीवन में भिन्न–भिन्न पहलुओं का सार्थक प्रभाव होना चाहिए इसलिए उपरोक्त शोधकार्य को उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए निम्न उद्देश्य निर्धारित किए जाऐंगे :–

1. कानपुर नगर में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
2. कानपुर नगर में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएं

1. अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राध्यापक तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं के पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थकर अंतर नहीं है।

4. अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4.1 अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4.2 अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4.3 अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं) एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6. अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7. अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8. अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8.1 अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत अन्य पिछड़ा वर्ग प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8.2 अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकाओं) सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8.3 अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध ''कानपुर नगर में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की पंथ निरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' में कानपुर नगर के बी.एड. महाविद्यालयों का चयन किया गया है। इन बी०एड० महाविद्यालयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये :–

अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थी (छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं) तथा गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययन प्रशिक्षणार्थी (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में

कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात दोनों ही प्रकार के बी०एड० महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी (छात्राध्यापक छात्राध्यापिकाओं) पंथनिरपेक्षता के प्रति समान रूप से तटस्थ अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् छात्राध्यापकों तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है तथा छात्राध्यापक पंथनिरपेक्षता के प्रति तटस्थ अभिवृत्ति रखते हैं जबकि छात्राध्यापिकायें पंथनिरपेक्षता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखती है।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजो में अध्ययनरत ग्रामीण छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत् शहरी छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः ग्रामीण तथा शहरी दोनों ही प्रकार के छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकायें पंथनिरपेक्षता के प्रति समान रूप से तटस्थ अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् सामान्य जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं तथा अनुसूचित जाति छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः तीनों वर्गों के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकायें पंथनिरपेक्षता के प्रति समान रूप से तटस्थ अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् सामान्य जाति छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तथा दोनों वर्गों के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकायें पंथनिरपेक्षता के प्रति समान रूप से तटस्थ अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययरत् सामान्य जाति छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा दोनों वर्गों के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकायें पंथनिरपेक्षता के प्रति समान रूप से तटस्थ अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा दोनों वर्गों के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं पंथनिरपेक्षता के प्रति समान रूप से तटस्थ अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात दोनों ही प्रकार के प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकायें सामाजिक चेतना के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा दोनों ही छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकायें सामाजिक चेतना के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत शहरी छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः ग्रामीण तथा शहरी दोनों ही प्रकार के छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकायें सामाजिक चेतना के प्रति समान रूप से सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् सामान्य जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं तथा अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः तीनों वर्गों के छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकायें सामाजिक चेतना के प्रति समान रूप से सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी.एड. कॉलेजों में अध्ययनरत अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक /

छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा दोनों वर्गों के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकायें सामाजिक चेतना के प्रति समान रूप से सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी.एड. कॉलेजों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा दोनों वर्गों के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकायें सामाजिक चेतना के प्रति समान रूप से सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी.एड. कॉलेजों में अध्ययनरत अनुसूचित जाकि के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा दोनों वर्गों के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकायें सामाजिक चेतना के प्रति समान रूप से सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रत्येक शोधकार्य कुछ न कुछ उद्देश्य या लक्ष्य अथवा किसी समस्या पर केन्द्रित होता है तथा अनुसंधान उस उद्देश्य या लक्ष्य का उस समस्या के समाधान में शिक्षा में एक नवीन क्रान्ति लाता है या फिर वर्तमान में उपलब्ध ज्ञान में एक और नवीन विचारधारा जोड़ता है या फिर किसी क्षेत्र विशेष में हुये पुराने अनुसंधानों का निगमन करता है अथवा दो विरोधी शोध परिणामों की दशा में यह शोधकर्ता को यह सूझ प्रदान करता है कि कौन सा शोध परिणाम स्वीकृत किया तथा कौन सा शोध परिणाम अस्वीकृत किया जाये।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता ने बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता तथा सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया है। जिसके शैक्षिक निहितार्थ अग्रांकित हैः–

(1) देश के भविष्य का निर्माण देश की कक्षाओं में हो रहा है। राष्ट्र व छात्र के भविष्य को संवारने की जिम्मेदारी शिक्षक की होती है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षक लिंग, धर्म, जाति, सम्प्रदाय व क्षेत्र के आधार पर किसी प्रकार का पूर्वाग्रह न रखता हो तथा इन संकीर्ण विचारधाराओं से ऊपर उठा हुआ हो। एक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह पंथनिरपेक्षता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखे व सभी धर्मों का सम्मान करें तथा अपने छात्रों में सभी धर्मों के प्रति समान व धार्मिक सहिष्णुता की भावना का विकास करने का प्रयास करें। शिक्षक बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकाओं में पंथनिरपेक्षता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करने में प्रस्तुत शोध एक नवीन दिशा प्रदान कर सकता है।

(2) वर्तमान समय में न केवल भारत बल्कि समूचा विश्व आतंकवाद, भ्रष्टाचार, प्राकृतिकि आपदाओं तथा पर्यावरण प्रदूषण आदि भीषण समस्याओं से सूझ रहा है, जिन्होनें समूची मानवता के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। अतः आवश्यक है कि शिक्षक स्वयं वर्तमान सामाजिक ज्वलंत समस्याओं से परिचित हो उनके प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं तथा अपने छात्रों को भी इनसे परिचित कराकर उनमें सामाजिक चेतना का विकास करने का प्रयास करें अतः शिक्षक बी०एड० कॉलेजों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं में सामाजिक चेतना के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

(3) विद्यालयों में प्रतिदिन प्रारम्भ में सभी धर्मों की प्रार्थना होनी चाहिए। प्रार्थना सभा में विभिन्न धर्मों से उद्धत नैतिक मूल्यों को विद्यार्थियों को सुनाए जायें, जिससे विद्यार्थियों में सर्वधर्म सम्भाव विकसतिस हो सके।

(4) प्रत्येक विद्यालय सरकारी या गैर सरकारी में किसी भी धर्म विशेष की शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए।

(5) सभी धर्म के प्रवर्तकों एवं महापुरूषों के जीवन के बारे में शिक्षा दी जानी चाहिए एवं उनके जन्म दिवस तथा धार्मिक त्यौहारों को सामान्य रूप से मनाया जाये, जिससे विद्यार्थी में उसके प्रति सम्मान भाव उत्पन्न हो सके एवं वे अन्य धर्मों का भी आदर कर सके।

(6) कक्षा में शिक्षक को सभी जाति, धर्म के विद्यार्थियों को समान रूप से पढ़ाया जाना चाहिए।

(7) प्रवेश के समय विद्यार्थियों को धर्म व जाति के आधार पर वरीयता न देकर योग्यता को वरीयता दी जानी चाहिए।

(8) बालक को विद्यालयों में धर्म विशेष की शिक्षा न देकर सभी धर्मो के बारे में शिक्षा दी जानी चाहिए।

(9) भारतीय संस्कृति विभिन्न धर्मों की संस्कृति है। अतः विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के बारे में शिक्षा दी जानी चाहिए।

(10) विद्यार्थियों को विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित धार्मिक स्थलों का भ्रमण कराया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में धार्मिक उदारता का विकास होगा।

(11) शैक्षिक प्रशासन में किसी भी प्रकार के धार्मिक भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

(12) पुस्तकालयों एवं वाचनालायों में विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों से सम्बन्धित साहित्यों की व्यवस्था होनी चाहिए। वाचनालयों में इनसे सम्बन्धित पत्र–पत्रिकाओं की व्यवस्था होनी चाहिये और यदि हो सके तो विभिन्न धर्मों के प्रवर्तकों के चित्र लगाये जाने चाहिए। इससे विद्यार्थियों में उचित दृष्टिकोण का विकास होगा।

(13) शिक्षा की पाठ्यचर्या में इस प्रकार परिवर्तन किया जायें कि धर्म एवं नैतिकता अलग–अलग विषय के रूप में नहीं अपितु समस्त विषयों के अभिन्न अंगों और जीवन की क्रिया कलापों के रूप में विकसित होना चाहिए। इसके लिए भाषा की पुस्तकों में विभिन्न धर्मों एवं संस्कृति के लेख होने चाहिए।

(14) सभी विद्यार्थियों को विकल्पों में कोई भी विषय एवं विद्यालय में आयोजित होने वाली सहगामी क्रियाओं के चयन में भी पूर्ण स्वतंत्रता दी जानी चाहिए तथा विद्यार्थियों के साथ किसी भी प्रकार का लिंग, धर्म व जाति के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वुच, एम. वी. – तृतीय सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली एन.सी.ई. आर.टी. 1987
2. वुच, एम. वी. – चतुर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली एन.सी.ई. आर.टी. 1991
3. गुप्ता, एस0पी0 – आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबार, शारदा पुस्तक भवन, 2005
4. सिंह, अरूण कुमार – मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना, मोतीलाल बनारसीदास, 2002
5. राय, पारसनाथ – अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 2006
6. श्रीवास्तव, डी.एस. – अनुसंधान विधियाँ, आगरा, साहित्य प्रकाशन, 2006
7. चन्द्र विपिन – आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, 1996
8. पाठक, त्यागी पी0डी0 – शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, आगरा, विनोद पुस्तक मंन्दिर, 1995
9. कश्यप, सुभाष – हमारा संविधान, नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, 2006
10. बसु, दुर्गादास – ''भारत का संविधन–एक परिचय'' आठवां संस्करण सन् 2002 बाधवा नागपुर
11. लाल, रमन बिहारी – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, मेरठ रस्तोगी पब्लिकेशन, 2001–02
12. गैरिट, एच0ई0 – सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर 1995
13. गुप्ता, एस0 पी0 – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, 2004
14. सारस्वत, मालती – शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, इलाहाबार, आलोक प्रकाशन, 2007

15. परीक्षापयोगी सीरीज – अतिरिक्तांक, प्रतियोगिता दर्पण–2002, हिन्दी मासिक राष्ट्रीय, आगरा, उपकार प्रकाशन
16. मंगल, एस0के0 – शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान, लुधियाना, टण्डन पब्लिकेशन, 2002
17. अस्थाना एवं अग्रवाल – मनोविज्ञान और शिक्षा, आगरा, विनोद प्रकाशन
18. मिश्रा, डी0सी0 – शिक्षाशास्त्र भाग एक तथा दो, कानपुर, अनुसंधान प्रकाशन
19. चौहान, एस0एस0 – शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में नवाचार, नोएडा, विकास पब्लिशिंग हाउस, 2007
20. चौबे, सरयू प्रसाद – तुलनात्मक शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर 1999